

भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए 06 से 12 जून, 2016 साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

राज्य/ जिले	मे माह में वर्षा की स्थिति (मिली मी.)						
	06	07	08	09	10	11	12
दिनांक							
	साप्ताहिक सलाह						
पंजाब	<p>पठानकोट में बुआई कार्य पूरा हो गया है। कपास तथा खरपतवार पर सफेद मक्खी के प्रकोप के लिए नियमित निगरानी करते रहें। कपास के खेत को खरपतवारों से मुक्त रखें। सफेद मक्खी की संख्या कपास पर 0.10 से 1.70 प्रौढ़ प्रति पत्ती दर्ज की गई। सफेद मक्खी की कपास पर औसत संख्या बेहलेवाला में 0.14 प्रौढ़ प्रति पत्ती; धाब शेरसिंह में 0.10 प्रौढ़; सुखवाला में 0.20 प्रौढ़; फरीदकोट स्थानिक में 1.70 प्रौढ़; अजित गिल में 0.64 प्रौढ़; कोठे चन्दसिंह में 0.20 प्रौढ़; उकण्डवाला में 0.20 प्रौढ़ तथा खारा में 0.15 प्रौढ़ तथा 0.63 प्रौढ़ प्रति पत्ती रिकार्ड की गई। उच्च तापमान से पौधे झूलस रहे हैं। अतः पहली सिंचाई बुआई के 30 दिनों के पश्चात करें। सिंचाई के बाद ही यूरिया की आधी मात्रा अर्थात् बीटी संकरों के लिए 65 किग्रा. का अनुप्रयोग करें। सिरसा में फसल पौधे अवस्था से प्रारंभिक वानस्पतिक अवस्था में हैं। अप्रैल में बुआई किए गए देसी तथा अमेरिकन किस्मों/ संकरों में पहली सिंचाई दें। बुआई पश्चात फसल की देखभाल की जा रही है। कुछ स्थानों में किसानों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति तथा पौधों का विरलीकरण कार्य भी किया है। पहली सिंचाई दिए जाने वाले खेतों में खरपतवारों का प्रकोप शुरू हो गया है।</p> <p>कपास के जिन खेतों में सिंचाई नहीं की गई है उनमें खरपतवारों का प्रकोप नहीं है। खरपतवारों का प्रकोप खेत की मेंदों तथा आस-पास के क्षेत्रों में भी देखा जा रहा है। सिरसा के कुछ स्थानों में सफेद मक्खी का प्रकोप 0 से 6 प्रति 3 पत्तियों के मध्य तथा पंजाब में अमेरिकन कपास में 2 से 8 प्रति 3 पत्तियाँ, एक सर्वेक्षण में दर्ज किया गया है। देसी कपास में किसानों के खेतों में कुछ स्थानों पर जड़ गलन देखी गई है। किसानों को सलाह दी जाती है कि नाशोकीटों की संख्या वृद्धि के लिए फसल की नियमित निगरानी करते रहें। आर्थिक हानि स्तर के करीब तक नाशोकीटों की संख्या वृद्धि पाए जाने वाले खेतों में आवश्यक होने पर नीम आधारित कीटनाशकों का छिड़काव करें। खेत के आस-पास के क्षेत्रों में भी यथासंभव खरपतवारों से मुक्त रखें। जड़ गलन की समस्या वाले खेतों में लक्षण दिखाई देते ही कर्बोडेजिम 1.0 ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर से इस घोल को प्रभावित पौधों की जड़ों में डालें।</p> <p>पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान में 12 से 18 जून के मध्य वर्षा का आगमन होने की संभावना है। वर्षा के बाद सफेद मक्खी की संख्या में कमी आ सकती है। नाशोकीटों के आर्थिक हानि स्तर पर पहुंचने से पहले रासायनिक कीटनाशकों का छिड़काव न करें।</p>						
हरियाणा							
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0
हिसार	0	0	0	0	0	0	0
फतेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0
राजस्थान							
हनुमानगढ़	0	0	0	1	6	3	6
श्रीगंगानगर	0	0	0	1	3	9	12
बांसवाड़ा	0	0	0	0	0	0	0
उड़ीसा							
कोरापुट	6	23	30	10	0	3	8
कालाहांडी	3	34	28	11	0	7	6
बोलांगीर	0	10	5	0	0	3	0
गुजरात							
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0
	<p>मानसून- पूर्व की वर्षा का लाभ उठाकर किसान भाई खेत की तैयारी कर रहे हैं। किसान कपास की किस्मों/संकरों की आवश्यक मात्रा में बीज खरीद लें। सघन रोपण प्रणाली के अंतर्गत जारी होने से पहले की किस्मों ओयूएटीबीएस-79 तथा बीएस-30 का परीक्षण अपने खेतों में कर सकते हैं।</p> <p>जून के तीसरे सप्ताह में वर्षा होने की संभावना है। बुआई के लिए आवश्यक तैयारी कर लें।</p> <p>जामनगर तथा राजकोट में मानसून का आगमन देरी से हो सकता है। जल संरक्षण उपायों के लिए विशेष रूप से बारानी कपास में ध्यान देने की आवश्यकता है। बारानी किसानों के लिए देसी कपास को प्राथमिकता देना आवश्यक है। यद्यपि जून के तीसरे सप्ताह में भी इस जिले में मानसून आने की संभावना है लेकिन वर्षा का वितरण अनियमित रहेगा अर्थात् वर्षा की निरंतरता एकरूप नहीं होगी। इन जिलों में दीर्घ अवधि का सूखाकाल जून के तीसरे सप्ताह से जुलाई के तीसरे सप्ताह के मध्य तक रह सकता है। इससे नन्ही फसल में नमी की बहुत कमी देखी जा सकती है। अतः संरक्षक सिंचाई के उपाय किए जा सकते हैं। नाली-मेंढ पर बुआई तथा पलवार के उपयोग जैसे नमी संरक्षण के संभावित उपायों को अपनाने के लिए कपास के किसानों द्वारा सावधानी बरती जा सकती है।</p>						

वडोदरा									यहाँ मानसून का आगमन देरी से हो सकता है। देसी कपास में जल संरक्षण के लिए ध्यान देने की आवश्यकता है। बारानी किसानों के लिए देसी कपास एक बेहतर विकल्प होगा। जून के तीसरे सप्ताह में मानसूनी वर्षा होने की संभावना है। बुआई के लिए खेत की तैयारी करें।
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0		
भरूच	0	0	0	0	0	0	0		
पाटन	0	0	0	0	0	0	0		
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0		
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	6		
मध्यप्रदेश									आगामी सप्ताह में वर्षा आगमन की संभावना है। समय पर बुआई के लिए 25 जून से पहले बुआई की तैयारी करें।
खरगोन	0	0	0	0	0	0	0		
धार	0	0	0	0	0	0	0		
खंडवा	0	0	0	0	0	0	0		
महाराष्ट्र									महाराष्ट्र में 2016 के लिए वर्षा का पूर्वानुमान: बेबसाइट www.accuweather.com से 90 दिनों के लिए जिला-वार मानसून की जानकारी एकत्र की गई है। इन पूर्वानुमानों में बदलाव आता रहेगा, फिर भी इनमें वर्षा वितरण के संकेत मिलेंगे। इससे फसल प्रबंधन के लिए निर्णय लेने में मदद मिलेगी जिससे सावधानी भी रखी जा सकती है। यहां कुछ प्रमुख कपास उत्पादक जिलों की वर्षा का पूर्वानुमान दिया जा रहा है।
नागपुर	6	1	1	0	6	5	3		
वर्धा	6	2	1	2	4	5	4		
चंद्रपुर	7	0	3	4	7	6	2		
यवतमाल	3	1	2	4	4	10	5		
अमरावती	0	1	1	0	5	6	6		
अकोला	0	0	1	2	4	3	4		
बुलढाना	0	0	1	2	6	6	3		
परभणी	4	1	0	0	2	3	10		
नांदेड़	0	0	0	0	0	3	9		
बीड	3	4	0	0	0	1	2		
वासिम	3	1	2	3	6	7	8		
धुले	0	0	0	0	0	0	0		
जलगांव	0	0	0	0	0	0	0		
जालना	0	0	0	0	0	1	2		
औरंगाबाद	1	0	0	0	2	1	4		
									वर्धा, नागपुर, और चंद्रपुर: इन जिलों में अच्छी वर्षा अर्थात् 830 मिमी. से अधिक वर्षा होने का पूर्वानुमान है। चंद्रपुर में वर्षा जून के दूसरे सप्ताह में आएगी जो 5-10 जून के आस-पास 50-60 मिमी. के लगभग होगी। जून के दूसरे सप्ताह में नागपुर तथा वर्धा जिलों में भी हल्की वर्षा होने का अनुमान है। नागपुर तथा वर्धा जिलों में 60 से 70 मिमी. वर्षा के साथ 16 जून को मानसून का आगमन होगा तथा 15 से 17 जून के मध्य 60 से 70 मिमी. वर्षा हो सकती है। वर्धा तथा नागपुर जिलों में 23 जून से प्रारंभ होकर प्रत्येक सप्ताह 2 जुलाई तक दो दिनों के लिए अच्छी वर्षा होगी कुल मिलाकर 200 मिमी. तक होगी। चंद्रपुर में इन 10 दिनों के अंदर 120 मिमी. वर्षा होगी। जुलाई के पहले पखवाड़ा 1-2 वर्षा दिनों को छोड़कर सुखाकाल का रहेगा। जुलाई 18 से लेकर अगस्त के तीसरे सप्ताह तक वर्षा का वितरण समान रहेगा। इस प्रकार इन तीनों जिलों में अच्छी वर्षा होगी। अतः वर्षा के लिए चिंतित होने का कोई कारण नहीं है। जल्दी बोई गई फसल को अधिक लाभ मिलेगा। बुआई का सर्वाधिक उपयुक्त समय 10 से 20 जून के मध्य रहेगा और 10 से 15 जून के मध्य बोई गई फसल को अपेक्षाकृत अधिक लाभ मिलेगा।
									यवतमाल तथा अमरावती : इन दिनों जिलों में कुल वर्षा लगभग 740 मिमी. होगी। मानसून के 23 जून तक आगमन का पूर्वानुमान है। जून के दूसरे तथा तीसरे सप्ताह में वर्षा आसमान वितरण के साथ मानसून आगमन तक 70 से 80 मिमी. तक हो सकती है। जून 23 से 2 जुलाई के मध्य 4-5 दिनों के नियमित अंतराल के साथ वर्षा होने का अनुमान है। जुलाई 3 से 17 के मध्य 1-2 दिनों के वर्षा दिनों को छोड़कर 14 दिनों का सुखाकाल रहने का अनुमान है। जुलाई 18 से 22 अगस्त तक बीच में कुछ छिटपुट अंतरालों के साथ अच्छी वर्षा होने का अनुमान है। कुल मिलाकर यह मौसम कपास की फसल के लिए अच्छा रहेगा। बुआई का सर्वाधिक उपयुक्त समय 10 से 20 जून के मध्य है।
									अकोला, वाशिम, और परभणी: परभणी में कुल 500 से 550 मिमी. तथा अकोला और वाशिम में 610 से 660 मिमी. के मध्य वर्षा होने का अनुमान है। इन जिलों में मानसून के 22-23 जून तक ही आगमन का अनुमान है जिसके साथ 2 जुलाई तक मध्य वर्षा होगी। इन तीनों जिलों में जून में ही 1-2 बार मानसूनपूर्व हल्की वर्षा हो सकती है। जुलाई के पहले पखवाड़े में 11-2 जुलाई के आस-पास 1-2 दिन वर्षा होने को छोड़कर सुखाकाल रहने का अनुमान है। जुलाई 19 से 14 अगस्त के मध्य समान वितरण के साथ वर्षा होगी। जून 14 से 25 का समय बुआई के लिए उपयुक्त रहेगा।
									बुलढाना, नांदेड़, धुले, जलगांव, जालना, तथा औरंगाबाद : धुले जिले में कुल वर्षा 650 मिमी. जबकि बुलढाना, नांदेड़, जलगांव, जालना, तथा औरंगाबाद जिलों में 500 से 550 मिमी. के मध्य वर्षा होने का अनुमान है। मानसून का आगमन जून के अंतिम सप्ताह में होगा। इसी सप्ताह में इन जिलों में कुल 100 से 110 मिमी. वर्षा हो सकती है। पुनः वर्षा मध्य जुलाई से होगी कुछ दिनों के अंतराल के बाद जो मध्य अगस्त तक छोटे अंतरालों के साथ जारी रहेगी। बारानी खेतों में जल संरक्षण के उपाय करना आवश्यक है। बुआई के लिए उपयुक्त समय जून के अंतिम सप्ताह से लेकर जुलाई के पहले सप्ताह के मध्य है।
									बीड : बीड जिले में समान वितरण के साथ 1000 से 1200 मिमी. कुल वर्षा होने का अनुमान है। यद्यपि अगस्त के तीसरे सप्ताह तक वर्षा समाप्त हो सकती है। सितंबर में भी पुनः वर्षा हो सकती है। वर्षा जल एकत्रिकरण तथा संग्रह करने की अति आवश्यकता है। जून के पहले पखवाड़े में बुआई करना अत्यावश्यक है।

इस वर्ष(2016) के लिए उपयुक्त किस्में तथा संकर: महाराष्ट्र में मानसून के अगस्त के अंत तक कमजोर पड़ने के संभावना है। विदग्ध तथा मराठवाडा में कुछ दिनों के लिए सितंबर में भी वर्षा हो सकती है। ऐसी परिस्थिति में लघु से मध्यम अवधि की किस्में, जैसे सुरज, एनएच-615, एके एच-081 अथवा देसी किस्मों जैसे फले धनवतरि, सीआईसीआर-रोजा, एकेए-07 का बुआई के लिए सघन रोपण प्रणाली में 45x10 सेमी. अथवा 60x10 सेमी. की सिफारिश की गई दूरियों पर जून के दूसरे सप्ताह में बुआई के लिए किया जा सकता है। इस मानसून की अनुमानित परिस्थिति के लिए जैसिड कीट के लिए सहनशील अंकुर जय बीटी, अंकुर 3034, अंकुर 3028, एमआरसी-7377, एमआरसी-7347, एमआरसी-7383, अजीत-11, अजीत-111, अजीत-155, राशि-779, राशि-625, राशि-656, मल्लिका, बन्नी, भक्ति, सोना, बलवान, सुरक्षा, जादू, केसीएच-711, केसीएच-144 जैसे बीटी संकरों की बुआई की जा सकती है। बीटी संकरों की यह सूची केवल सांकेतिक है, इनके निष्पादन की पुष्टि भा.कृ.अनु.प.- सी.आई.सी.आर. द्वारा नहीं की गई है। कम अवधि के दूसरे भी संकर हैं जो जैसिड के लिए सहनशील हैं। यहाँ दिए गए बीटी संकर किसानों के अनुभव तथा बीज कंपनियों से पृच्छा के बाद ही बताए जा रहे हैं। महाराष्ट्र में लंबी अवधि के कपास के संकरों की बुआई न की जाए। नवंबर-दिसंबर में ग्लर की गलाबी सूड़ी(इल्लो) का नुकसान भी दिखाई दे सकता है। यहाँ यह बात भी ध्यान देने योग्य है की ऊपर दिये गए कुछ अगती संकर/ किस्में त्रिपुर्ण फसल प्रबंधन उपायों जैसे- 30 से 50 दिनों की फसल वृद्धि अवस्था में यूरिया के अधिक अनुप्रयोग और मोनोक्रोटोफॉस, एसीफेट, इमोडेक्लोप्रिड, जैसे कीटनाशकों के अनुप्रयोग से इनका फसलकाल बढ़ जाता है।

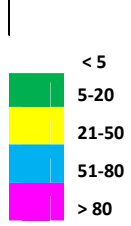
कपास के लिए खेत की तैयारी तथा सावधानी के उपाय: अच्छी फसल के लिए बुआई से पहले जमीन के अच्छी तैयारी आवश्यक है। जमीन की तैयारी ठीक से नहीं करने पर अंकुरण कम होने से पौधों की संख्या में कमी तथा फसल में शीघ्र तथा अधिक खरपतवार होने से वानस्पतिक अवस्था में फसल के साथ इनकी प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है। अतः अच्छी खेती की शर्तों में भूमि की अच्छी तैयारी का समावेश है। कपास की खेती के लिए जमीन की अपेक्षाकृत अच्छी तैयारी वर्षा से पहले आवश्यक होती है, जो इस प्रकार है।

बारानी तथा सिंचित कपास:

- 1) फसलों, खरपतवारों के ढुंठों, इनके अवशेषों को हाथ से चुनकर खेत की सफाई करें। इनमें कीटों की सुप्त अवस्थाएँ तथा रोगों के निवेशन विद्यमान हो सकते हैं। अतः स्वस्थ फसल के लिए स्वच्छ खेती आवश्यक है।
- 2) तीन वर्षों के अंतराल पर खेत की गहरी जुताई करें।
- 3) जमीन की सूखी अवस्था में 12 से 15 सेमी. गहरी जुताई करें। इससे जमीन की निचली सतह कडक नहीं होगी तथा जल व पोषक तत्वों की हानि भी रुकेगी। कपास की खेती में उथली तथा अत्यधिक गहरी जुताई सहायक नहीं होगी। गहरी जुताई से मृदा के निचले स्तर की कड़ी पर्त टूटती है।
- 4) अच्छी सूड़ी हुई गोबर की खाद अथवा कंपोस्ट 2-3 टन प्रति हे. अथवा केंचुआ खाद 2.5 टन प्रति हे. का बुआई से 10-15 दिनों पहले 3-4 वर्षों में एक बार डालने से मिट्टी की उर्वरा शक्ति बनी रहती है।
- 5) गोबर की खाद/ कंपोस्ट/ केंचुआ खाद खेत में बिखरने के बाद जुताई 20-25 सेमी. गहरी मिट्टी पलटने वाले हल से करें। इससे यह खाद मृदा में अच्छी तरह मिल सकेगी और छोटे आकार के (5 सेमी. से अधिक) मिट्टी के ढेले भी टूट सकेंगे।
- 6) सिंचित परिस्थिति के लिए गोबर की अथवा जैविक खाद खेत में प्रति वर्ष 2-3 टन प्रति हे. की दर से डालें।
- 7) सिंचित परिस्थिति में ढलान के आड़ी दिशा में चौड़ी मेंढे बनाएँ तथा बुआई 3 से 5 सेमी. गहराई पर करें। बुआई के 30 दिनों के बाद पौधों की जड़ों पर मिट्टी चढ़ाएँ। काली मृदा में उपयुक्त नमी के स्थिति में ही खेत तैयारी करें।
- 8) पहली वर्षा के बाद ही पेंडीमैथेलिन 3.5 ली/हे. अर्थात् 1.0 किगा./हे. जैसे खरपतवारनाशकों का खेत की मृदा पर छिड़काव करें।
- 9) छोटे ढेलों को तोड़ने के लिए बखर(ब्लेड हैरो) तथा मिट्टी को ढीला करने के लिए कलटीवेटर का प्रयोग करें।
- 10) मिट्टी को 15-20 सेमी. गहरी भुरभुरी करने के लिए ट्रैक्टर चालित रोटावेटर का प्रयोग करें।
- 11) पानी की अच्छी निकासी के लिए बुआई पूर्व खेत में मृदा का समतल करने के लिए लकड़ी का पाटा चलाएँ अथवा खेत की जमीन को 0.6 से 1.0% तक समतल करने के लिए लेजर लेवलर का प्रयोग करें।
- 12) उथली तथा मध्यम गहरी मृदाओं के लिए चौड़ी बैड-नाली प्रणाली 150 से 180 सेमी. चौड़ी बैड तथा 30 सेमी. गहरी नाली के साथ बनाएँ। गहरी मृदाओं के लिए स्थायी चौड़ी मेंढ ट्रैक्टर/ अथवा बैलों से बनाएँ।
- 13) किस्म अथवा संकर की सिफारिश की हुई दूरी पर दतारी से लाइन बनाएँ/खींचें।
- 14) नत्र तथा फोस्फोरस की मध्यम मात्रा का आधार मात्रा के रूप में कतारों में दें। दतारी से लाइन खींचते समय ही नीम लेपित यूरिया (50 किगा.) तथा सिंगल सुपरफॉसफेट के 6 बैग (300 किगा.) प्रति हे. मृदा में अनुप्रयोग करें।
- 15) एजोटोबैक्टेरि, पी.एस.बी.(दोनों 25 गा प्रति किगा. की दर से) तथा ट्राईकोडर्मा विरीडी (25 गा. प्रति किगा. की दर से) जैसे जैवउर्वरकों से बीजोपचार करें। उपचरित बीज की 24 घंटों के अन्दर ही बुआई हो जानी चाहिए।
- 16) अच्छे अंकुरण तथा समान पौध घनत्व के लिए 5 सेमी. गहराई में हाथ से अथवा यांत्रिक विधि द्वारा मानसूनपूर्व अथवा 70 से 80 मिमी. वर्षा होने के बाद बुआई करें।
- 17) अंकुरण के 4 से 6 दिनों के बाद सप्ताह में एक बार एक महीने की फसल होने तक डवरा से अंतःशय्य क्रियाएँ करें।

								<p>सावधानी के उपाय: इस वर्ष मध्य जुलाई में भारी वर्षा हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप खेत में जलमग्नता की स्थिति हो सकती है। जुलाई के पहले पखवाड़े में सुखाकाल रहने का अनुमान है। मानसून काल के जल्दी समाप्त होने के कारण फसल की ग्लुन निर्माण की अवस्था में पानी की कमी से मृदा नमी प्रतिबल का सामना करना पड़ सकता है। विशेषतः काली मृदाओं में अन्य समस्याएँ भी दिखाई दे सकती हैं। इन समस्याओं का सामना करने के लिए खेत की तैयारी के समय ही निम्न उपाय करने की सिफारिश की जाती है। गहरी तथा चौड़ी दरारें : उचित मृदा नमी रहने पर जैविक खादों का अनुप्रयोग तथा जुताई करके इस समस्या को कम किया जा सकता है। कैल्सियम कार्बोनेट की अधिक मात्रा: तालाब की तले की मिट्टी, राख पैसमड तथा जिप्सम का अनुप्रयोग, कपास के साथ दलहनी फसलों की अंतःफसल तथा फलीदार दलहनी फसलों के साथ ही फसल चक्र में खेती, जैसे उपायों को मृदा सुधारकों के रूप में अपनाना। खेत की जमीन की उपरी पर्त कड़ी हो जाना: खेत की जुताई बैलों से अथवा जुताई उपकरणों से करना। ट्रैक्टर द्वारा पुलाऊ से खेत की 50 सेमी. गहरी जुताई करने से मृदा की कड़ी पर्त टूटती है। खेत में अपर्याप्त पानी निकासी व्यवस्था होने पर अत्यधिक जलमग्नता: जमीन की गहरी जुताई(50 सेमी.) करके जमीन को समतल(0.6%) करें। कपास की बआई चौड़ी क्यारी-नाली विधि तथा स्थाई चौड़ी मैदों के साथ उचित जैल निकासी विधि से करें। दीर्घ वर्षा रहित अवधि व सूखा स्थिति: वानस्पतिक वृद्धि अवस्था में जैविक खादों का जड़ क्षेत्र में प्रयोग करना। बोर(सनई) या ढेंचा का 40-45 दिनों की होने पर इनका पलवार के रूप में प्रयोग करना। इससे वाष्पीकरण रुकेगा। फसल की क्रान्तिक अवस्था में(ग्लुन निर्माण तथा विकास अवस्था) पूरक सिंचाई करना।</p>
तेलंगाना								<p>इस सप्ताह वर्षा होने की संभावना है। जून 20 से पहले बआई अवश्य करने की सिफारिश है। वर्षा का वितरण सामान्य ही रहेगा। जून के दूसरे पखवाड़े में तथा अगस्त के अंत में कम अवधि का सुखाकाल रह सकता है। वारंगल में 800 मिमि. से अधिक तथा दूसरे जिलों में 700 से 750 मिमि. वर्षा होने की संभावना है। शीघ्र तैयार होने वाली कम अवधि की किस्में अथवा संकर इस मौसम में उपयुक्त रहेंगी।</p>
आदिलाबाद	10	16	15	25	28	8	6	
वारंगल	9	6	15	25	10	8	10	
खम्मम	17	22	10	18	5	8	10	
कारिगर	12	16	15	25	10	14	10	
नालगोंडा	20	26	12	20	5	3	15	
आंध्रप्रदेश								<p>प्रारंभिक अच्छी वर्षा के बाद लंबी अवधि का सुखाकाल आ सकता है। वर्षा का वितरण असमान तथा प्रतिकूल रह सकता है। बारानी खेतों में नमी संरक्षण उपायों को करने की आवश्यकता है।</p>
गुन्टूर	27	26	40	25	35	30	20	
प्रकासम			70	25	50	35	25	
कर्नाटक								<p>जून के पहले पखवाड़े में वर्षा आगमन के बाद फसल बआई कार्य प्रारंभ होगा। इस अवसर पर आवश्यक दूरी पर खेत में वर्षा जल संरक्षण के लिए नाली बनाएँ इससे बआई कार्य में मदद मिलेगी। अपने क्षेत्र के लिए उपयुक्त संकर बीजों की खरीदी तुरंत पूरी करें। यदि मई के अंत तक बीटी संकरों की यदि बआई नहीं कर पाए हैं तो यह कार्य शीघ्रतः शीघ्र बआई पूर्व सिंचाई देकर पूरा करें। बारानी परिस्थिति में जून के पहले पखवाड़े के दौरान पर्याप्त वर्षा आने पर तुरन्त कपास की बआई करें। बआई आंतरजातीय संकरों के लिए 90x60 सेमी. परे तथा अंतरजातीय बीटी संकरों के लिए 120x60 सेमी. अंतर पर करें। प्रत्येक स्थल पर एकल बीज डालें। अंतिम 3 से 4 कतारों में रिफ्यूजिया कपास के बीजों की बआई करें। एजोस्पीरिलम तथा पी.एस.बी. जैसे जैवसंवर्धकों से बीजोपचार करें।</p>
धारवाड़	14	6	10	14	10	8	8	
हवेली	28	9	10	12	15	10	14	
मैसूर	2	3	10	14	17	12	10	
तमिलनाडू								<p>कपास की बआई में अभी देर है।</p>
पेरंबलूर	1	1	0	3	0	0	3	
सलेम	3	2	10	8	0	3	3	
त्रिची	1	1	0	3	0	0	0	
विरडुनगर	1	2	5	7	3	7	3	

आदश वर्षा
वर्षा मि.मी.
वर्षा मि.मी.
वर्षा मि.मी.
वर्षा मि.मी.
वर्षा मि.मी.



0 वर्षा मि.मी.

Source:

http://nwp.imd.gov.in/bias/dist_fcst.htm

<http://www.accuweather.com/en/in/india-weather>

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार,
डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर